# बचपन को संवारना ही उद्देश्य है
# बीना हांडा

बच्चे भविष्य की बुनियाद होते हैं और यह बुनियाद जितनी ज्यादा मजबूत होगी, उन के भविष्य की इमारत उतनी ही ज्यादा बुलंद होगी. बच्चों को बुनियादी तालीम के लिए लोग चिंतित हैं और हम सभी इस का उचित हल भी चाहते हैं, पर कुछ समझ नहीं आता. बच्चों की शिक्षा व विकास को ले कर बीना ने एक फाउंडेशन की स्थापना की है और जीजान से बच्चों का भविष्य संवारने के काम में लगी हैं.

### व्यक्तित्व निर्माण में बचपन का महत्त्व

बीना ने बताया, "मैं जब ट्रेनिंग सैशन लेती थी तब वह जमाना कंप्यूटर का नहीं था. तब



लैक्चर नोट करना पड़ता था. उस दौरान मैं ने देखा की एक बड़ा टैलेंटेड मैनेजर सिर्फ लिखने की खातिर लिख रहा था. मैं ने पूछा कि क्यों लिखते हो, तुम तो बहुत टैलेंटेड हो ? तो उस ने जवाब दिया कि बस, ऐसे ही. उस की बात सुन कर पहले तो मैं दंग रह गई. फिर तहकीकात की तो पता चला कि बचपन में उसे हर गलती पर 5-10 बार लिखने की सजा मिलती थी.

बीना ने इस वाकिआ के बाद महसूस किया कि यही समय है जब व्यक्तित्व का निर्माण होता है. वे आगे कहती हैं, "मुझे लगा कि मैं बच्चों के लिए कुछ करूं, क्योंकि मैं ने बखूबी देखा है कि व्यक्तित्व के निर्माण में बचपन का बहुत महत्त्व होता है."

### पोएसिस फाउंडेशन

पोएसिस के बारे में बात करते हुए बीना ने बताया, "यह एक ग्रीक शब्द है, इस का अर्थ होता है निर्माण करना. मैं ने आईआईएम, अहमदाबाद से मार्केटिंग और ह्यूमन रिसोर्स में अध्ययन किया है और 3 दशक तक ह्यूमन रिसोर्स के क्षेत्र में काम भी किया है.

"पोएसिस फाउंडेशन ने बच्चों के लिए कई प्रोग्राम चला रखे हैं. हम ने 8 से 13 साल के बच्चों के लिए 4 प्रोग्राम डिजाइन किए हैं. प्रथम, स्मार्टर वे ग्रेटर चौइस, इस के 15 सैशन हैं. दूसरा, लीडरशिप डैवलपमेंट है. इस के भी 15 सैशन हैं. तीसरा, बिल्डिंग फ्यूचर्स अचीवर्स, इस के 25 सैशन हैं. चौथा है, थिंकिंग माइंडफुल्ली, इस के 15 सैशन हैं."

वे आगे कहती हैं, "वास्तव में आज के बच्चे हम से ज्यादा ऐडवांस हैं. उन की उम्र में

> **व्यक्तित्व विकास** के लिए बच्चों को व्यवहारिक और नैतिक शिक्षा देना बीना हांडा का शगल है और इस मुहिम से वे संतुष्ट भी हैं...

हम लोग इतने ऐडवांस नहीं थे. इसलिए उन्हें बोलने और सुनने का महत्त्व एवं तरीका समझाना बेहद जरूरी है. कुछ बच्चे बिलकुल नहीं बोलते तो कुछ बहुत बोलते हैं, सुनते ही नहीं. इन्हें ग्रुप में ऐक्सपीरियंस ओरिएंटेड प्रोग्राम भी करवाए जाते हैं. वे खुद सोचते हैं कि बोलना और सुनना क्यों जरूरी है. हर बैच में 16 बच्चे होते हैं."

### कैसे सीखते हैं बच्चे

बीना बताती हैं कि हमारे कार्यक्रमों में बच्चों को अलगअलग तरीके से शिक्षित किया जाता है. इन में पैरेंट्स के लिए भी सैशन होते हैं. बच्चे अच्छी तरह से जानते हैं कि वे अपना समय कैसे बरबाद करते हैं. उन्हें सब कुछ पता रहता है, लेकिन वे अच्छी बातों पर अमल नहीं करते हैं. मम्मी चिल्लाती रहती हैं पर वे उन की सुनते नहीं. यहां आ कर वे अपनेआप को और्गेनाइज करना सीख जाते हैं.

मातापिता हम से ज्यादा उन के नजदीक होते हैं और वही सही फीडबैक देते हुए कहते हैं कि अब उन का बच्चा समय पर होमवर्क कंप्लीट करता है, कमरा साफसुथरा रखता है. पहले क्लास में नहीं बोलने से उसे जो नुकसान होता था, वह अब नहीं होता, क्योंकि बच्चे को समझ आ जाता है कि बोलना भी जरूरी है. बच्चे को इमोशनली स्ट्रौंग कैसे होना चाहिए और अपनी इमोशंस पर कैसे कंट्रोल करना चाहिए, यहां बच्चा यह भी सीखता है.

### शिष्टाचार जरूरी है

बीना कहती हैं, "बच्चों को हम अचीवर्स के उदाहरण देते हैं. जैसे कि सुनीता विलियम्स ने बचपन में नील आर्मस्ट्रौंग को देख कर अंतरिक्ष में जाने का निर्णय लिया था. गांधीजी ने बचपन में हरिश्चंद्र तारामती नाटक देख कर झूठ नहीं बोलने का प्रण लिया था.

"थौमस एडीसन को स्कूल से निकाल दिया गया था, क्योंकि वे बहुत सवाल पूछते थे. टीचर को लगता था कि यह बच्चा मंदबुद्धि है. बाद में उन की मां उन्हें बेसमैंट में पढ़ाती थीं और उन्होंने आगे जा कर 1,098 पेटैंट रजिस्टर्ड करवाए."

"मतलब यह कि बचपन का समय बच्चे के व्यक्तित्व विकास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होता है. इस दौरान बच्चा मेहनत करता है. अगर बच्चा सोचता है कि वह सब कुछ कर सकता है और इस के लिए वह प्रयास भी करता है, तो हमें उसे प्रोत्साहन देना चाहिए."

### पढ़ना पसंद है

बीना ने बताया, "मुझे बच्चों की दुनिया में सदा विचरण करना, घूमनाफिरना और लोगों से मिलनाजुलना बहुत पसंद है. गृहशोभा बहुत चाव से पढ़ती हूं. जब छोटी थी तो चंपक पढ़ती थी. अब अपने बच्चों को कहानियां सुनाने के लिए और उन को पढ़ने के लिए चंपक ला कर देती हूं.

### पोएसिस से कितनी संतुष्ट

बीना कहती हैं, "मैं इतना बताना चाहूंगी कि पोएसिस के प्रोग्राम बच्चों में लर्निंग हैबिट पैदा करते हैं, जो आगे चल कर उन के व्यक्तित्व के विकास के लिए बहुत जरूरी होते हैं. मैं अपने मकसद में कामयाब रही हूं और उम्मीद करती हूं कि भविष्य में इसी तरह बच्चों के लिए कुछ रचनात्मक कार्य करती रहूं."

-गीता